

fügen: तानेव पाशान् स्निष्ठा KATHĀS. 70, 93. — partic. स्निष्ठ 1) *hängend, haftend, klebend an* (loc.) KĀTH. 25, 6. KĀTJ. ÇR. 9, 4, 39. मनसि स्निष्ठेव बद्धेव DBĪRTAS. 73, 14. भुजाप्रस्निष्टेन मुसलेन HARIV. 3767. तस्य कार्त्तव्यसं वर्म — विवैभो सर्वतः स्निष्ठम् *überall anliegend* MBh. 7, 5161. अतिस्निष्ठ-चीनांशुकान्तरीय DAÇAK. 90, 14. अस्निष्ठे चैव मे स्निष्ठे कृदयान्नापसर्पति MBh. 7, 2481. चनुशरणमुस्निष्ठः कूर्मः so v. a. mit ganz eingezogenen Füßen HARIV. 9626. विषयास्निष्ठ *nicht an der Sinnenwelt hängend* MBh. 12, 9085. स्निष्ठा (शिष्ठा ed. Bomb.) क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था *an der Person haftend, nicht auf Andere übergehend* MĀLAV. 15. — 2) *zusammengefügt, an einander geschlossen, verbunden*: स्निष्ठं अयास्या वपुः Spr. (II) 2823. स्निष्ठं दुःखेन भिद्यते । भिन्नस्निष्ठा तु या प्रीतिः न सा (स Druckfehler) स्नेहेन वर्तते ॥ 2832. मण्डलं सर्वतः स्निष्ठं रथिनाम् MBh. 7, 1168. स्निष्ठं च सर्वतश्चक्रं रथमण्डलमाप्नुते 6110. सुस्निष्ठपद्मार्गल VARĀH. BRH. S. 43, 58. स्निष्ठाकुली चरणी 68, 2, 70, 1. सुस्निष्ठाकुलिपादा प्रमदा 105, 12. सुस्निष्ठसौ 68, 34. सुस्निष्ठसंधि 38. संधात इति सुस्निष्ठसंधिता 100. स्निष्ठसंधिक MBh. 9, 302. स्निष्ठाञ्जलिपुटा R. 3, 4, 4. परस्परस्निष्ठजङ्घा DAÇAK. 90, 11. सुस्निष्ठगुणतया रमणीय एष वः सुमनसो संनिवेशः MĀLATĪ. 18, 4. सुस्निष्ठमपि लोकेषु भेदयन् HARIV. 3209. जन्मवत्तमं लोके सुस्निष्ठं न विद्यते MBh. 13, 2608. नातिस्निष्ठः संधिरस्य मृणालवलयस्य ÇĀK. Ch. 62, 1. शत्रुणा नहि संदध्यात्सुस्निष्ठेनापि संधिना Spr. (II) 6371. द्यौर्था वचनविन्यासः सुस्निष्ठः SĀH. D. 303. किं स्विद्वयमपेतार्थमस्निष्ठमममञ्जसम् (अस्निष्ठम् die neuere Ausg.) तावुभौ प्रतिवक्ष्यामः *Unzusammenhängendes* MBh. 7, 1990. सुस्निष्ठधातुसौहृद *sehr fest* R. GORR. 2, 91, 6. सुस्निष्ठं कुरुते कार्यम् so v. a. *fest abschliessen* SĀH. D. 87. तं तस्य स्वरसंक्रमं मृदुगिरः स्निष्ठं च तल्लीस्वनम् so v. a. *der begleitende Saitenton* MĀKĪH. 44, 13. — 3) *umfasst —, umfassen haltend, mit acc.* P. 3, 4, 72. अस्या वामं भुजं स्निष्ठा (स्निष्ठा?) येषा तिष्ठति R. 2, 92, 22 (101, 24 GORR.). स्निष्ठे गुरुं भवान् P. 3, 4, 72, Schol. — 4) *umfasst, umfassen* P. 3, 4, 72. स्निष्ठे गुरुवता Schol. स्निष्ठः कण्ठे किमिति न मया मूढया प्राणनाथः Spr. (II) 6591. मरुता (so ist zu lesen oder मरुतास्निष्ठा) स्निष्ठा (v. l. für स्पृष्टा) लतामाधवी ÇĀK. 58, v. l. स्निष्ठस्तत्कालितेजसा (अस्निष्ठ° BROCKHAUS) KATHĀS. 18, 78. — 5) *(in der Bedeutung zusammenfließend) doppelstinnig* SĀH. D. 301. 437. 548. 643. — 6) *उःस्निष्ठ* Bez. des in उ übergehenden ल oder des aus ल entstandenen उ Comm. zu TS. PRĀT. 13, 16; vgl. दुःस्पृष्ट Ind. St. 4, 349. — caus. स्नेषयति DHĀTUP. 32, 38 (स्नेषणे, अलिङ्गने). *zusammenfügen, schliessen*: स्नेषयेत्स्वजघनम् RATIRABASJA bei MALLIN. zu KIR. 9, 50. स्नेषित *verbunden mit*: अग्निदे संधिं देहस्य जग्या स्नेषितस्य हि (mit Anspielung auf den Namen जगमंध) MBh. 12, 132. — आ 1) *hängen bleiben, kleben; mit loc.*: यच्च पूर्णं । आशिस्नेषं दृषदि TS. 3, 7, 21. *sich klammern an* (acc.): द्रोणस्यास्निष्य तं रथम् MBh. 7, 8844. — 2) *umfassen, in seine Arme schliessen*: सूर्गो ज्वलती स्वास्निष्येत् M. 11, 103. Spr. 2934. (II) 1980. 2596. 3366 (पद्मगः). KATHĀS. 25, 267. 58, 96. 62, 85. 92, 16. भुजैरिवास्निषन् BHĀG. P. 4, 9, 3. 12, 8, 37. आशिस्नेष PAÑKĀT. 1, 4, 44. 2, 3, 30. राममास्निषत् R. 2, 96, 22 (105, 21 GORR.). BHĀG. P. 10, 60, 27. पितुरास्निष्यते ऽङ्गानि Spr. (II) 4230. पुत्रमास्निष्य MBh. 1, 4468. 3, 11997. 12177. R. GORR. 2, 123, 7. ÇĀK. 48, 10. 56, 11. KATHĀS. 37, 185. 39, 218. 41, 50. 45, 139. SĀH. D. 39, 20. BHĀG. P. 9, 10,

40. बालूपपीडम् BHĀTĪ. 5, 94. आस्निष्ठम् KATHĀS. 119, 110. pass.: आस्निष्यमाणाः प्रियया 15, 2. — partic. आस्निष्ठ 1) *hängen geblieben, klebend an* (loc.) ÇĀT. Br. 4, 4, 26. *geklammert an*: पादयोः KATHĀS. 34, 15. — 2) *umfassen haltend, mit acc.*: लक्ष्मीम् Vop. 26, 129. HARIV. 15121. R. 7, 16, 26 (statt des verbi finiti). आस्निष्ठवत् dass. ÇĀC. 9, 85. — 3) *umfassen, umschlungen*: परस्परस्निष्ठशालीः (hierher oder zu 2) पादपैः MBh. 1, 2857. दंपती KATHĀS. 116, 110. BHĀG. P. 10, 81, 15. ०भूमिं पतिमापगानाम् ÇĀC. 3, 72. नवीनशादलास्निष्ठा सस्वेदाभूदधुंघरा KATHĀS. 114, 4. अङ्गदास्निष्ठभुज RAGH. 6, 53. मेघमास्निष्ठसानुम् MRGH. 2. — Statt पुरामुर्मास्निष्य ARĀG. 6, 12 lesen die beiden Ausg. des MBh. 3, 12090 besser: पुरां मुदमाश्चित्य. Vgl. आस्निष. — caus. 1) *befestigen, aufkleben*: किरणयोऽमुस्वर्णम् LĀTJ. 2, 8, 25. KĀTJ. ÇR. 5, 3, 7. — 2) *umfassen, umschliessen*: परस्परस्निष्ठिताङ्गः R. 5, 13, 58.

— उपा *umfassen*: पतिदेहमुपास्निष्य MĀRK. P. 135, 40. — partic. ०स्निष्ठ *angepackt habend*: एकमतं नागराजः MBh. 1, 1125.

— समा 1) *sich klammern an* (acc.): रथं समास्निष्य MBh. 3, 12086. — 2) *umfassen, umarmen*: समास्निष्यत्सूतपुत्रम् MBh. 7, 5392. Spr. 3179. ०स्निष्यत् MBh. 3, 10043. ०स्नितत् BHĀTĪ. 15, 62. ०स्निष्य MBh. 1, 5418. 6021. अङ्गमङ्गैः 2, 901. 4, 755. HARIV. 14838. Verz. d. Oxf. H. 9, b, 22. RĀGĀ-TAR. 4, 435. partic. ०स्निष्ठ *umfassen* Spr. 5174. ०स्निष्ठावन्धोऽन्यम् MBh. 4, 1838. — Vgl. समास्नेष. — caus. *verbinden, vereinigen* TS. 2, 3, 2, 2.

— उप *sich anschmiegen, dicht herantreten*: भीमसेनमुपास्निष्यत् MBh. 4, 515. ०स्निष्य MĀLAV. 45, 9. एनमुर्तोपस्निष्य DAÇAK. 74, 5. 86, 5. 6. गङ्गा यमुनामुपस्निष्यति *nähert sich* P. 1, 3, 25, VĀRT. 1, Schol. — partic. ०स्निष्ठ 1) *befestigt an*: अङ्गैः अङ्गैः वै पुरुषस्य पाप्मोर्पस्निष्ठः TBr. 3, 8, 47, 4. — 2) *dicht herantreten*: समीपम् PAÑKĀT. ed. orn. 18, 12. impers.: उपस्निष्ठं भवता P. 3, 4, 72, Schol. — Vgl. उपस्नेष, उपस्नेषणा. — caus. *näher bringen*: शरम् VIKRAM. 78, 11. रथम् *dicht heranfahren* 10, 16. 13, 16.

— नि caus. *befestigen an, aufkleben* ÇĀT. Br. 2, 5, 2, 15.

— प्र partic. ०स्निष्ठ *zusammengeballt*: प्रस्निष्ठं च न ज्ञानति यथाप इव पोसवः MBh. 12, 11951. — Vgl. प्रस्निष्ठ fg.

— वि 1) *auseinander gehen, sich trennen, sich lösen*: शरब्न्धा विशिष्युः BHĀTĪ. 14, 67. जग्मा विशिष्यत्संधिविषकः KATHĀS. 72, 89. ततो ऽस्य राज्ञो राक्षस्य चिराद्विशिष्यतोर्मिथः 55, 229. — 2) *trennen, entfernen von* (abl.): विशिष्येतां तु नृपतेः KATHĀS. 32, 140. 188. pass.: एषा राज्ञो विशिष्यते 145. Vielleicht ist überall विश्ने° zu lesen. — partic. ०स्निष्ठ *getrennt* AIT. Br. 5, 32. ÇĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 22. तौ चिरविशिष्टसंस्निष्टौ KATHĀS. 74, 320. विशिष्टमेघनादास्त्रबन्धनं *gelöst* RAGH. 12, 76. कर्पोरुभयोरेव विशिष्टतरशाखयोः *weit auseinanderstehend* Verz. d. Oxf. H. 202, b, 17. *der sich von seiner Partei getrennt hat* KĀM. NITRIS. 15, 56. *dislocirt, verrenkt* (von Gliedern) SUÇR. 1, 182, 7. 300, 9. 13. 2, 28, 4. — Vgl. विस्नेष fg. — caus. *trennen*: संकृतान् Spr. (II) 1171. संजीवकं प्रभोः PAÑKĀT. 42, 7 (ed. orn. 38, 3). बुद्ध्या विस्नेषयति तम् so v. a. *bringen ihn um seinen Verstand* Spr. (II) 3304. partic. ०स्नेषित *getrennt* MRGH. 7. KATHĀS. 73, 441. गगणं वायुना *auseinandergerissen* MĀKĪH. 76, 21. *auseinandergeflossen* MALLIN. zu KUMĀRAS. 3, 38. नासिका *abgetrennt* SUÇR. 1, 60, 10. ०वत्स *dessen Brust zerrissen ist* 2, 503, 5.

— प्रवि s. प्रविस्नेष.